IJIRSET
International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2320-6710

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 10, Issue 2, February 2021

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.512

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com www.ijirset.com

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.512|

|| Volume 10, Issue 2, February 2021 ||

DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1002098

गिरिजा कुमार माथुर कृत कल्पान्तर में आधुनिक जीवन बोध

Devendra Kumar Gupta

Assistant Professor, Department of Hindi, Government College, Dholpur, Rajasthan, India

सार

गिरिजा कुमार माथुर (२२ अगस्त १९१९ - १० जनवरी १९९४) एक कवि, नाटककार और समालोचक थे। गिरिजा कुमार माथुर का जन्म मध्य प्रदेश के अशोक नगर में हुआ।[1] उनके पिता देवीचरण माथुर स्कूल अध्यापक थे तथा साहित्य एवं संगीत के शौकीन थे। वे कविता भी लिखा करते थे। सितार बजाने में प्रवीण थे। माता लक्ष्मीदेवी मालवा की रहने वाली थीं और शिक्षित थीं। गिरिजाकुमार की प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। उनके पिता ने घर ही अंग्रेजी, इतिहास, भूगोल आदि पढ़ाया। स्थानीय कॉलेज से इण्टरमीडिएट करने के बाद १९३६ में स्नातक उपाधि के लिए ग्वालियर चले गये। ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज से उन्होंने शिक्षा ग्रहण की तथा सन् १९३८ में उन्होंने बी.ए. किया, १९४१ में उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम°ए° किया तथा वकालत की परीक्षा भी पास की। सन १९४० में उनका विवाह दिल्ली में शकुन्त माथुर से हुआ, जो अज्ञेय द्वारा सम्पादित सप्तक परम्परा ('दूसरा सप्तक') की पहली कवयित्री रहीं। 1943 से 'ऑल इंडिया रेडियो' में अनेक महत्वपूर्ण पदों पर रहते हुए अंग्रेजी और उर्दू के वर्चस्व के बीच हिन्दी को पहचान दिलाई। लोकप्रिय रेडियो चैनल 'विविध भारती' उन्हीं की संकल्पना का मूर्त रूप है। माथुर जी दूरदर्शन के उप-महानिदेशक के पद से सेवानिवृत्त हुए।

गिरिजाकुमार की काव्यात्मक शुरुआत १९३४ में ब्रजभाषा के परम्परागत कवित्त-सवैया लेखन से हुई। वे विद्रोही काव्य परम्परा के रचनाकार माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन आदि की रचनाओं से अत्यधिक प्रभावित हुए और १९४१ में प्रकाशित अपने प्रथम काव्य संग्रह 'मंजीर' की भूमिका उन्होंने निराला से लिखवायी। उनकी रचना का प्रारम्भ द्वितीय विश्वयुद्ध की घटनाओं से उत्पन्न प्रतिक्रियाओं से युक्त है तथा भारत में चल रहे राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन से प्रभावित है। सन १९४३ में अज्ञेय द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित 'तारसप्तक' के सात कवियों में से एक कवि गिरिजाकुमार भी हैं। यहाँ उनकी रचनाओं में प्रयोगशीलता देखी जा सकती है। कविता के अतिरिक्त वे एकांकी नाटक, आलोचना, गीति-काव्य तथा शास्त्रीय विषयों पर भी लिखते रहे हैं। भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद की साहित्यिक पत्रिका 'गगनांचल' का संपादन करने के अलावा उन्होंने कहानी, नाटक तथा आलोचनाएँ भी लिखी हैं। उनका ही लिखा एक भावान्तर गीत "हम होंगे कामयाब" समूह गान के रूप में अत्यंत लोकप्रिय है। १९९१ में आपको कविता-संग्रह "मै वक्त के हूँ सामने" के लिए हिंदी का साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा इसी काव्य संग्रह के लिए १९९३ में के० के० बिरला फ़ाउंडेशन द्वारा दिया जाने वाला प्रतिष्ठित व्यास सम्मान प्रदान किया गया। उन्हें शलाका सम्मान से भी सम्मानित किया जा चुका है। गिरिजाकुमार माथुर की समग्र काव्य-यात्रा से परिचित होने के लिए उनकी पुस्तक "मुझे और अभी कहना है" अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

परिचय

गिरिजाकुमार माथुर का जन्म 22 अगस्त 1919 को मध्य प्रदेश के अशोकनगर में हुआ था। उन्हें उनके पिता ने इतिहास, भूगोल और अंग्रेजी में होमस्कूल दाखिल किया था। झांसी में अपनी प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद, उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से एमए (अंग्रेजी) और एलएलबी की डिग्री प्राप्त की। कुछ वर्षों तक कानून का अभ्यास करने के बाद, उन्होंने ऑल इंडिया रेडियो और बाद में दूरदर्शन में काम करना शुरू किया।

कानून की डिग्री प्राप्त करने के बाद, माथुर ने शुरू में एक वकील के रूप में काम किया, लेकिन बाद में वे ऑल इंडिया रेडियो के दिल्ली कार्यालय में शामिल हो गए। वहां कुछ वर्षों के बाद, वह भारत के तत्कालीन एकमात्र टेलीविजन प्रसारण संगठन, दूरदर्शन में शामिल हो गए।[3]

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.512|

|| Volume 10, Issue 2, February 2021 ||

DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1002098

माथुर ने 1941 में अपना पहला कविता संग्रह मंजीर प्रकाशित किया।[दूरदर्शन } में अपनी सेवा के दौरान माथुर ने लोकप्रिय सुसमाचार और नागरिक अधिकार आंदोलन गीत "वी विल ओवर" का हिंदी में अनुवाद "होंगे कामयाब" (होंगे कामयाब) के रूप में किया।[4] इसे दूरदर्शन ऑर्केस्ट्रा की एक महिला गायिका ने गाया था और संगीत को सतीश भाटिया ने भारतीय संगीत वाद्ययंत्रों का उपयोग करके व्यवस्थित किया था। गाने के इस संस्करण को बाद में टीवीएस सारेगामा द्वारा जारी किया गया था। यह हिंदी गायन 1970 में सामाजिक उत्थान के गीत के रूप में जारी किया गया था जोअक्सर 1970 और 1980 के दशक में दूरदर्शन द्वारा प्रसारित किया जाता था। उस समय दूरदर्शन भारत का एकमात्र टेलीविजन स्टेशन था, और यह गीत विशेष रूप से राष्ट्रीय महत्व के दिनों में बजाया जाता था। माथुर ने दूरदर्शन में काम करना जारी रखा, 1978 में उप महानिदेशक के रूप में सेवानिवृत्त हुए।

निवेदन

'कल्पान्तर' आधुनिक युग की वैज्ञानिक प्रगति के परिप्रेक्ष्य में पद्धतियों के विचारधारात्मक संघर्ष पर आधारित प्रतीक-काव्य है, जिसमें युद्ध और शांति की विश्व-समस्या को मानवीय संदर्भ में प्रस्तुत करने का यत्न किया गया है। वैसे, संकेत रूप में इसकी कथा आदमी के इतिहास की परिवर्तन-गाथा ही है, परंतु 'कल्पान्तर' में विश्व समाज की वर्तमान स्थिति और पृथ्वी के अस्तित्व को ही केंद्र में रखा गया है। इस दृष्टि से यह काव्य आज चारों ओर व्याप्त चरम भय, आतंक, हिंसा, हत्या, क्रूरता, पशुता और युद्धोन्माद के विरुद्ध शांति के पक्ष में चारों ओर से उठती आवाज़ में एक आवाज़ अपनी भी मिलाता है।

बीसवीं सदी में संसार की प्रगति मानवीय स्वतंत्रता एवं समता को लेकर हुई थी। किंतु साथ ही इस शताब्दी ने दो भयावह विश्वयुद्ध देखे और तीसरा लंबा क्षेत्रीय युद्ध कहीं न कहीं चलता रहा है, जिसमें शक्तिशाली राष्ट्रों ने तरह-तरह के मारक अस्त्र, विनाशक यंत्र, विषैले रसायन, नर्व-गैस, अणुशक्ति, पर्यावरण-विध्वंस और अंतरिक्ष युग के संभावित युद्धों के प्रयोगात्मक परीक्षण किए हैं। इस तरह वर्तमान वैज्ञानिक और तकनीकी विभूति का पूरा इस्तेमाल मानवीय मंगल यानी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक मुक्ति के लिए नहीं हो रहा बल्कि विभिन्न शक्ति-संपन्न देशों द्वारा अपना-अपना प्रभुत्व बनाए रखने की प्रतिस्पर्धा ने सामूहिक विनाश का चरम संकट उपस्थित कर दिया है।

इस शताब्दी में मूल रूप से तीन-चार प्रवृत्तियां एकसाथ चलती रही हैं। एक प्रवृत्ति धन, वैभव, व्यावसायिक लिप्सा, अंधाधुंध औद्योगिक

विचार-विमर्श

गिरिजाकुमार माथुर ने साहित्य में अपना करियर 1934 में ब्रज भाषा में शुरू किया। वे माखनलाल चतुर्वेदी और बालकृष्ण शर्मा जैसे लेखकों से काफी प्रभावित हुए, उन्होंने 1941 में अपना पहला संकलन, 'मंजीर' प्रकाशित किया। हिंदी साहित्य में उनका महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने समाज को नैतिक संदेश देने का कार्य अपनी कलम से कविताओं के माध्यम से किया। उनके उल्लेखनीय कार्यों में शामिल हैं:

- नैश और निर्माण
- धूप के धन
- शीलापंख चमकीले
- भीत्री नदी की यात्रा (संग्रह)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.512|

|| Volume 10, Issue 2, February 2021 ||

DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1002098

- जनम कैड (नाटक)
- नई कविता: सीमा और संभावना

गिरिजाकुमार माथुर तर सप्तक में शामिल सात प्रख्यात हिंदी कवियों में से एक थे। कविताओं के अलावा, उन्होंने कई नाटक, गीत और निबंध भी लिखे। 1991 में, उन्हें उनके संकलन, "मैं वक्त के हुन सामने" के साथ-साथ उसी वर्ष व्यास सम्मान के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।[5] उन्हें लोकप्रिय अंग्रेजी गीत "वी शैल ओवरकम" के हिंदी में अनुवाद के लिए जाना जाता है। "माथुर ने अपनी आत्मकथा मुझे और अभी कहना है" में अपने जीवन की यात्रा का वर्णन किया है।

की सही और परिपूर्ण पहिचान पर केन्द्रित होगी । 'शांति देश' इसी का प्रतीक है । इसमें व्यक्ति, समाज, सत्ता-प्रतिष्ठान और राज्य के रिश्तों में मार्मिक संतुलन से आगे बढ़कर प्रकृति के जैविक आधार की पहचान और उसके साथ भविष्य के दूरगामी संबंधों का निर्धारण अनिवार्य होगा । यदि आदमी अपने साथ पृथ्वी के जीवन की सामूहिक हत्या नहीं करना चाहता तो उसे ऐसी समाज-व्यवस्था की रचना करनी होगी जिसमें आर्थिक साम्य के मूलाधार पर लोकतांत्रिक सांस्कृतिक मुक्तियां संभव हो सकें । राजनीतिक तंत्र तभी असली अर्थ में मानवीय स्वरूप पा सकेगा । × × × ऐसी ही नवीन सांस्कृतिक समाज-व्यवस्था मानवीय गरिमा, आर्थिक समता और मनुष्य के व्यक्तित्व की मर्मशीलता के अनुकूल हो सकती है ।

वर्षों पहिले अपने विदेश प्रवास के समय 'कल्पान्तर' की परिकल्पना मन में आई थी और शब्दों में तभी रेखांकित हुई थी । पिछले २०-२५ वर्षों में संसार जिस घटना-क्रम से गुज़रा है उसमें ये समस्याएं और भी भयावह होती गई हैं । युद्ध, हिंसा, क्रूरता का विरोध और शांति की पक्षधरता आशावादी कल्पना या उदारवादी कामना नहीं है बल्कि आज की एक ठोस वास्तविकता एवं अनिवार्यता है ! आज स्थिति वहां पहुंच गई है जहां आदमी का ही नहीं, जीवनधारी ग्रह-लोक के रूप में पृथ्वी का भी अस्तित्व खतरे में है । बीसवीं सदी का अंत हो रहा है । आदमी अंतरिक्ष-युग में पहुंच चुका है । अनन्त शून्य की अगाध कालिमा में घूमते ग्रह-नक्षत्रों के बीच वह अपनी पृथ्वी के सुंदर नीलांक-गोलक को पूरा देख चुका है । अंतरिक्ष की परिधि में भारहीन तैरते हुए जो ममता और आत्मीयता पृथ्वी के लिए उसके मन में जागती है वैसी ललक पृथ्वी पर रहते हुए उसे क्यों नहीं होती ? यह जानते हुए भी कि समस्त सौर-मंडल में ही नहीं अनेक नक्षत्र-मंडलों के बीच सिर्फ पृथ्वी ही एकमात्र जीवनधारी ग्रह-लोक है, आदमी—विशेष रूप से वे जिनके हाथ में सत्ता, साधन और शक्तिमत्ता है—आपसी घृणा और लिप्सा से अंधे होकर पृथ्वी से जीवन-क्रम को ही समाप्त करने में क्यों लगे हुए हैं ? क्यों आदमी विराट-तरु से बंधी, जन्म-मृत्यु के आवर्तनों में अनाधार घूमती

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.512|

|| Volume 10, Issue 2, February 2021 ||

DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1002098

परिणाम

अपनी अद्वितीय नील-नौका की जीवंत किंतु अदृश्य रस्सी को ही काट डालना चाहता है ? क्यों वह अपने इतिहास और संस्कृति की जलती मशाल को अधिक चमकीला बनाने के बजाय उसे कुचलकर बुझा देना चाहता है ? ये ऐसे नए और गंभीर प्रश्न हैं जिनका जवाब राजनीति, सत्ता, वर्ग, संप्रदाय, राष्ट्रीय हित, सिद्धांतवाद और पद्धतियों से ऊपर उठकर पृथ्वी और आदमी को केंद्र में रखकर हमें शीघ्र खोजना होगा ।

'कल्पान्तर' इन प्रश्नों से टकराने का एक छोटा-सा विनम्र प्रयास है ।

निष्कर्ष

।। पृथ्वी-गीत ।।

जयति पृथ्वी
जयति धरणी
जयति जननी
जयति जीवन !

आदि तुम हो अंत हो तुम
बीज-सूत्र अनंत हो तुम
विकसिता क्रमवंत हो तुम
मृत्यु पर हर क्षण विजयिनी
स्वर्ग - जननी
जय चिरंतन !

कोटि ग्रह, नक्षत्र दीपित
चक्रमय नीहारिकाएं
घूमती सूने नभों में
सृष्टि की अग्निम छटाएं

१६ / कल्पान्तर

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.512|
|| Volume 10, Issue 2, February 2021 ||
DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1002098

लक्ष जलते तारकों में
एक तुम सुंदर, सचेतन !

नील, लोहित, हरित, श्यामल,
रितु-बरन तन, सिंधु आँचल
दिवस चंदन, रात काजल
गंध-रूपों की कमलिनी
ज्योति - वदनी
अमर यौवन !

खिलीं तुम पर अरुणिमाएं
मानवी केसर - कथाएं
मृत्यु के फंगस - वनों पर
उठीं हर युग में ऋचाएं
ले प्रलय की भस्म रचतीं
नित नये संस्कृति तपोवन !

भूमि के कर खंड लघुतम
लघु करों में बाल - परचम
राष्ट्र शिशु फिरते भयातुर
घृणा, हिंसा, युद्ध में भ्रम
मिटा अंतर एक करतीं
एक संस्कृति, एक जीवन !

अग्नि - अणु कल्पांत हरतीं
विगत में छवि नवल भरतीं

कल्पान्तर / १७

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.512|

|| Volume 10, Issue 2, February 2021 ||

DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1002098

।। गाथाकार ।।

सहसा सोने का घना धुंध
हट जाता है
खूंखार बमों के फटने का
अर्राता स्वर रह जाता है
बिजली का बटन दबाते ही
जैसे बुझता सारा प्रकाश
बुझ गये राक्षसी भवन सभी
बेजान नगर, ज्यों पड़ी लाश
कोने-कोने में गूंज रही—
फौजी बूटों की भीम चाप
भूचाल आ रहे बड़े-बड़े
सागर में उठती गरम भाप
है ढँके समूचा क्षितिज—
गोल सिक्का विशाल वह सोने का
जिसके पीछे से आता स्वर
अगणित लोगों के रोने का

७८ / कल्पान्तर

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.512|

|| Volume 10, Issue 2, February 2021 ||

DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1002098

× × ×

दूसरे क्षितिज पर ओर-छोर
हैं तार कटीले कसे हुए
लोहे की है अभेद्य जाली
इस्पाती खंभे गड़े हुए—
जाली के ऊपर जगह अगह
हैं लगी अलक्त्रान आंखें
जिसके आगे बममार खड़े
हर वक्त लैस खोले पांखें
जाली के पार दिगंतों तक
टैंकों की है दीवार खड़ी
काला मुँह ऊपर किये हुए
लाखों तोपें हैं बड़ी बड़ी
फैक्टरी उगलती जाती हैं
हथियार बड़े से और बड़े—
हर व्यक्ति फौज में है भर्ती
मुंह सिले हुए हैं लोग खड़े
भवनों की दीवारों पर है
अतिनायक की तस्वीर बनी
हर पोस्टर में उसका चेहरा
हर जगह उसी की मूर्ति तनी
घर घर चौराहों के ऊपर
लाउडस्पीकर हजारों चिल्लाते
डिक्टेटर की तोतावाणी
चौबीसों घंटे दुहराते

कल्पान्तर / ७९

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.512|

|| Volume 10, Issue 2, February 2021 ||

DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1002098

संदर्भ

1. "गिरिजा कुमार माथुर". anubhuti-hindi.org. अनुभूति. 10 October 2018. मूल (एचटीएम) से 10 October 2018 को पुरालेखित.
2. ↑ "गिरिजाकुमार माथुर शताब्दी स्मरणः मेरे युवा आम में नया बौर आया है, खुशबू बहुत है..." आज तक. अभिगमन तिथि 2019
3. ↑ "मुझे और अभी कहना है". www.pustak.org. 2019
4. ↑ "Girija Kumar Mathur". veethi.com. अभिगमन तिथि 2018
5. ↑ "..:: SAHITYA : Akademi Awards ::." web.archive.org. 2017
6. ↑ February 15, india today digital; February 15, 1994 ISSUE DATE:; July 3, 1994UPDATED:; Ist, 2013 12:33. "Hindi poet Girija Kumar Mathur passes away". India Today (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor: 7.512

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details

www.ijirset.com